ISSN 2249-5169 ₹ 25

वर्ष 8 अंक 10 जुलाई 2012

समाज-धर्म

सामाजिक जागृति को समर्पित मासिक समाचार पत्रिका

युवा शक्ति

राष्ट्रोत्थान में भूमिका

बन्द के दौरान तोड़-फोड़
- ज़िम्मेदार कौन?

हमारी युवा पीढ़ी

- डॉ० शशि प्रभा जैन

प्रत्येक देश की सबसे मूल्यवान पूँजी उसके युवक होते हैं। भारत में इस तथ्य को युगों से मान्यता प्राप्त है। ऋषियों ने युवाकाल को अपने सामाजिक ढाँचे में पर्याप्त महत्त्व दिया है। मानव जीवन को प्राचीन आचार्यों ने चार भागों में विभाजित किया है। आयु के क्रमिक विकास के साथ मनुष्य का ज्ञान बढ़ता जाता है और साथ ही उसकी भौतिक और मानसिक आवश्यकताएँ भी बढ़ती हैं। जीवन के क्रिया-कलापों द्वारा ही भावी जीवन का निर्माण होता है। गृहस्थ जीवन की सफलता विद्यार्थी जीवन पर अवलंबित है। यही आधारशिला है जिस पर भावी जीवन की इमारत खड़ी होती है तथा उस नींव के अनुसार उसमें दृढ़ता आती है। जीवन का लक्ष्य विद्यार्थी जीवन में बनता, भावी जीवन में पूरा होता है।

युवावस्था के दौरान व्यक्ति अटूट शक्ति सम्पन्न होता है। उसमें कार्य सम्पादन की अभूतपूर्व क्षमता होती है। उसका मन और मस्तिष्क तेज होता है। यदि उसकी शक्ति और कार्यक्षमता को सही दिशा मिलती है तो उसके मन और शरीर के घोड़े सही दिशा में दौड़ते हैं और यह अत्यधिक लाभप्रद होता है। यदि विद्यार्थी को उचित पथ-प्रदर्शन प्राप्त नहीं होता है तो वह उच्छृंखल हो जाता है। भारतीय छात्र अपनी पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य से देश को आगे बढ़ाए। सुधीजन उनका उचित मार्गदर्शन करें, ताकि वे देश की प्रगति में सम्यक योगदान दे सकें।

मनुष्यता का महत्त्व :

यदि मनुष्य, मनुष्य की सहायता नहीं कर सकता तो मनुष्य और पशु में अन्तर क्या है? अपना पेट तो पशु भी पालते हैं। मनुष्य तो वही है जो दूसरों का पेट भरे और रोते को हँसाए। मनुष्य सभी जीवों में श्रेष्ठ है। यदि हम अपने बन्धुओं के लिए त्याग न कर सकें, उनके सुख-दुःख में हाथ न बंटा सकें तो हमारी मानव योनि व्यर्थ है और मानव योनि में जन्म लेकर भी हम पशु हैं।

वर्तमान युग में महात्मा गांधी

सुभाषचन्द्र बोस, पंडित नेहरू आदि अनेक ऐसे व्यक्ति हुए, जिन्होंने लोक कल्याण के लिए अपनी सुख-सुविधाओं का त्याग किया, अनेक प्रकार के कष्टों को झेला। ऐसे लोगों को महान व्यक्ति कहा जाएगा। मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होकर गाँधी ने पैदल नोआखली के विषाक्त वातावरण में यात्रा की थी। वहाँ लोगों को सान्त्वना दी तथा शान्ति स्थापना का प्रयास किया। ऐसे लोगों को महात्मा या वास्तविक मानव कहा जाता है। इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दयानन्द आदि अनेक महात्माओं ने मनुष्यों के लिए आत्म-बलिदान किया है। ऐसे ही महानुभावों में वास्तविक मानवता के दर्शन होते हैं।

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों में, शहीदों में कौन सी भावना थी, जिससे प्रेरित होकर उन लोगों ने तन-मन-धन का त्याग किया। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि स्वाभिमान और लोक कल्याण की भावना का उनमें प्रबल प्रभाव था। इस प्रकार के महान व्यक्तित्व का अब भी अभाव नहीं। एक व्यक्ति को भी यदि वास्तविक लाभ पहुँचाया जा सकता तो उसी में उसकी सफलता है।

जो मनुष्य दूसरों के लिए प्राण त्यागने को तैयार रहता है, उसके लिए भी त्याग करने वाले मिलते हैं। ऐसे लोगों को परम्परा बन जाती है कि दूसरे उससे बराबर प्रभावित होते रहते हैं और इस प्रकार से समाज में ऐसा वातावरण बन जाता है कि किसी को भी विपत्ति में निराश्रयता का अनुभव नहीं होता। सभी न्याय के पथ पर चलने का प्रयास करते हैं, इससे समाज का स्वस्थ विकास होता है। मानवता को परखने का यह एक सच्चा सिद्धान्त है।

भारत में सामाजिक दायित्व के प्रति बुद्धिजीवियों की भूमिका का प्रश्न अत्यन्त प्राचीन है। स्वतन्त्रता के पश्चात देश में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में परिवर्तन की हवा आई और बुद्धिजीवियों का समाज में दायित्वों के प्रति बोध अत्यधिक गम्भीर हो गया। इस स्थिति में आशा की जाती थी कि बुद्धिजीवी समाज में अन्याय, भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाएंगे। बुद्धिजीवी समाज के रीढ़ हैं। समस्त कलाकृतियों की रचना और वैज्ञानिक संशोधन उन्हीं के हाथों हुआ है और आगे भी होगा। उन्होंने सदैव से ही विभिन्न क्षेत्रों में समाज का नेतृत्व किया है। सामाजिक क्रान्ति के इस युग में सबसे बड़ी त्रासदी बुरे लोगों की चीत्कार नहीं, बल्कि भले लोगों की चुप्पी रही। डॉ० राधाकृष्णन के विचारों को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। यह संसार वैज्ञानिक शक्तियों से नहीं, बल्कि

मूल्यवान विचारों से चलता है और अपने मूल्यवान विचार समाज के सम्मुख रखने में किंचित-मात्र भी हिचकिचाना नहीं चाहिए।

व्यष्टि से ही समष्टि का निर्माण होता है। हर युवक-युवती को अपना पूर्ण योगदान देना चाहिए। जिम्मेदार व्यक्ति ही कार्यों को पूर्णता प्रदान कर पाता है। सभी में अपनत्व की भावना का होना अनिवार्य तत्व है। मानव की सार्थकता है परोपकार में और परोपकार में मानवता से सम्बन्धित गुणों का समावेश हो जाता है और उसमें मानवता का पूर्ण विकास माना जाता है। मनुष्य के लिए त्याग करना, परहित में जीना-मरना ही सबसे श्रेष्ठ माना जाता है।

विद्यार्थी जीवन मानव-जीवन का मुख्य अंग है। इसी पर मनुष्य का भूत जीवन आधारित रहता है। इसके कर्तव्य सरल, उपयोगी, आनन्ददायक, लाभकर तथा उत्तम हैं हमें विवेकपूर्ण विचार करके उनका पालन करना चाहिए। विद्यार्थी के मुख्य कर्तव्य हैं - अध्ययन, मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक उन्नति, कर्तव्य और अधिकार का समुचित प्रयोग, विविध प्रकार का ज्ञानार्जन, सक्रिय राजनीति से दूर रहना, सांसारिकता से न्यूनतम सम्बन्ध रखना तथा समुचित व्यवहार आदि। हर विद्यार्थी को अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। इसी से जीवन सुखी, शान्तिपूर्ण और आनन्दमय बनता है। आत्म सम्मान का प्रभाव मनुष्य तथा समाज दोनों पर पड़ता है। ऐसे मनुष्य को समाज सदा आदर के साथ स्मरण करता है। उनमें दृढ़ता की एक मान्य परम्परा रहती है। इससे आत्म संतोष की भावना बढ़ती है तथा आत्म शान्ति मिलती है। मानव के मूल गुणों में आत्म-सम्मान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः हर उन्नतिशील मनुष्य का यह लक्ष्य होना चाहिए कि वह यथासंभव आत्म सम्मान को विकसित करे और उसकी रक्षा करे।